लोकविद्या जन आन्दोलन

लोकसभा चुनाव 2024 के सन्दर्भ में ज्ञान-वार्ता अभियान

लोकविद्या जन आन्दोलन एक ज्ञान आन्दोलन है और ज्ञान की विविध धाराओं के बीच बराबरी, भाईचारा और सहयोग का पैरोकार है. ज्ञान के क्षेत्र में ऊँच-नीच समाज में ऊँच-नीच, दुराव और नफ़रत के बीज बोती है. **'सामाजिक न्याय' पर पड़ा ताला 'ज्ञान में बराबरी' के विचार से खुलता है.** मई-जून 2024 को होने जा रहे लोकसभा चुनावों में इस सवाल को सामाजिक बहस में लाने का प्रयास होना चाहिए. इस बहस को हम **'सामाजिक न्याय का अगला चरण'** नाम दे सकते हैं.

विचार

धीरे-धीरे देश की राजनीति दो बड़े खेमों में बंट गई है. एक तरफ दक्षिणपंथी हिन्दुत्ववादी हैं और दूसरी तरफ प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष हैं. दोनों ही की आर्थिक नीतियां एक-सी हैं. दोनों ही देश के सामान्य जन के श्रम और ज्ञान को लूटकर राज करने की नीति अपनाते रहे हैं और ऐसा करने के लिए दिल्ली की सत्ता को मज़बूत करने और बरकरार रखने का विचार दोनों ही रखते हैं. हमारे ही देश में नहीं बल्कि दुनिया के अनेक देशों में लोकतंत्र के नाम पर कमोबेश यही स्थिति है. पिछले सौ-दो सौ वर्षों से चल रही लोकतंत्र की व्यवस्थाओं में सामान्य जन की उपेक्षा और उत्पीडन का पैमाना बढ़ता ही गया है. न्याय, रचनात्मक पहल, भाईचारा और सहयोग के विचारों और मूल्यों को निष्क्रिय बना दिया गया है. लोकतंत्र और समाजवाद से अधिक बेहतर व्यवस्थाओं के बारे में सोचने की ज़रूरत है.

जब तक लोकतंत्र के नाम पर बड़ी आबादी वाले इस बहुज्ञानी देश पर दिल्ली से, यानि एक राजधानी के मार्फ़त राजसत्ता को केन्द्रित कर सरकारें चलेंगी तब तक बहुजन-समाज के लोग यानि किसान, कारीगर, आदिवासी, महिलाएं और छोटी-छोटी पूँजी के बल पर सेवा देकर जीवनयापन करने वालों(जैसे, ठेला-पटरी-गुमटी के दुकानदार, मरम्मत और **रखरखाव** के कार्य में लगे कारीगर, स्वास्थ्य-कर्मी, रिक्शा-ऑटोचालक आदि) का भविष्य अन्धकार में रहेगा.

सामाजिक न्याय का अर्थ है खुशहाली, सम्मान, पहल और रचना के साधनों पर सबका बराबर का अधिकार, जिसे निरंतर छीना गया है. अधिकार की बात के साथ साधनों के नवीनीकरण, संशोधन और निर्माण के ज्ञान और संसाधनों की व्यवस्थाओं और सञ्चालन की ज़िम्मेदारी का दावा भी ज़रूरी है, यानि बहुजन-समाज को अपने ज्ञानी होने का दावा भी पेश करना होगा. जब तक अधिकार, ज़िम्मेदारी और ज्ञान (लोकविद्या) का दावा एक साथ नहीं उठेगा तब तक दिल्ली से हो रही लूट को रोका नहीं जा सकेगा. बहुजन-समाज के ज्ञान, अधिकार और ज़िम्मेदारी की आपसी गतिशील चेतना के निर्माण की ज़रूरत है.

हमारे देश की दर्शन परम्पराओं और सामान्य जीवन में भी **'स्वायत्तता'** को मनुष्य की चेतना का एक बुनियादी विचार (शर्त) माना गया. विविध कालखंडों में दर्शन और ज्ञान की **परम्पराओं** के नवीनीकरण के अभियान और प्रवाह भी **'सामाजिक न्याय'** के विचार से अनुप्राणित रहे. भारत के भू-भाग पर अधिकांश कालों में समाज संगठन और सञ्चालन की परम्पराएँ तो **'स्वराज'** की ही रहीं. **'सामाजिक न्याय', 'स्वायत्त समाज' और 'स्वराज' के विचार और परम्पराएँ**

यहाँ के बहुजन-समाज की ही देन हैं. आज भी ये विचार मिलकर समाज के लिए **न्यायपूर्ण** धागे बुन सकते हैं.

इसी उद्देश्य से अप्रैल 2024 से लोकविद्या जन आन्दोलन निम्नलिखित बिन्दुओं पर ज्ञान-वार्ता को आकार देने की पहल ले रहा है. इन वार्ताओं में शामिल होकर सामाजिक न्याय और स्वराज के लिए अनुकूल मार्गों को बनाने में अपना योगदान करें.

ज्ञान-वार्ता के मुद्दे

- सामान्य-जन यानि बहुजन के पास जो ज्ञान (लोकविद्या) है, उसके बल पर उसे सम्मान के साथ जीवनयापन करने के अवसर निर्मित हों. हर किसान और कारीगर परिवार में सरकारी कर्मचारी के जैसी पक्की, नियमित और बराबर की आय हो. विविध कार्यों में लगे लोगों की आय का अनुपात 5:1 से अधिक न हो

- रोज़गार के सवाल को सिर्फ शिक्षित युवाओं तक सीमित न करके, लोकविद्या-समाज के समस्त युवाओं को शामिल करके हल करने के प्रयास हों. ऐसा न करने से रोज़गार के नाम पर अधिकांश युवाओं पर मजदूर बन जाने की बाध्यता लादने की संभावना बढती है.

- क्षेत्रीय राज और केन्द्रीय राज के बीच स्वायत्तता और बराबरी के सम्बन्ध बनाना सामाजिक न्याय के लिए एक सकारात्मक कदम है. आज की दुनिया में इन संबंधों को बनाने के विचार और व्यवस्थाओं पर चिंतन की दिशा तय हो.

- हर क्षेत्र में **'वितरित व्यवस्थाओं का निर्माण'** सामाजिक न्याय को गतिशील और स्थाई बनाता है. उत्पादन, वितरण, उपभोग, समाज संगठन, सञ्चालन आदि के प्रकार, विचार, व्यवस्था, सम्बन्ध आदि पर सार्वजनिक चर्चा **'सामाजिक न्याय'** के अगले चरण को प्रकाशित करेगी.

संपर्क:
लक्ष्मण प्रसाद (7905245553), रामजनम(8765619982),
फ़ज़लुर्रहमान (7905245553), हरिश्चंद्र केवट (9555744251)

लोकविद्या जन आंदोलन
प्रमुख कार्यालय
विद्या आश्रम, सा,10/82,अशोक मार्ग
सारनाथ, वाराणसी-221007
मो. : 9838944822